गाथा GAATHA ISSN : 3049-3463 (Online)

ठीकरे की मंगनी : एक अध्ययन

✍ डॉ पूजा कुमारी
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
ब्रज मोहन दास महाविद्यालय, दयालपुर, हाजीपुर

नासिरा शर्मा की यह उपन्यास स्त्री विमर्श में एक अलग अध्याय लिखता है। जिसका प्रकाशन 1989 ईव में हुआ था। इसके कथा का विकास एक रूढ़िवादी मिथक 'ठीकरे की मंगनी' पर हुआ है। इस उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' के अलावा 'शाल्मली' उपन्यास की तरह 'महरुख' भी हो सकता था क्योंकि केन्द्रीय पात्र 'महरुख' है और आकर्षक भी लगता परंतु लेखिका कहती हैं कि " 'ठीकरे की मंगनी' रखने का एक अन्दाज ये था कि जो हमारा भारतीय समाज है, उसमें ठीकरा क्या है?, झज्जर क्या है?, औरत की क्या हैसियत है? इसको एक तरफ का रुपक मैने दिया।" इसका केन्द्रीय पात्र एक स्त्री महरुख और एक पुरुष खालाजाद भाई रफ़त भाई हैं। इन दोनों की कहानी है "हालात की मार से पैदा हुई एक लड़की महरुख की यह कहानी है और दूसरी तरफ यह कहानी रफ़त भाई की भी है, मगर दोनों में जो बुनियादी फ़र्क है, नजरिया का है।" इस उपन्यास का केन्द्रीय विषय है कि कैसे किसी लड़की की मंगनी ठीकरे से कर दी जाती है जिसका मूर्त रूप उसका खालाजाद भाई होता है। उसके नाम पर अपनी पूरी जिंदगी न्योछावर कर देती है, फिर भी अंत में उसे मिलता क्या है? केवल उदासी, अकेलापन आदि आदि। इस उपन्यास के संदर्भ में लेखिका का कथन है कि "यह मेरे सोच की कड़ी है। पहली कड़ी की ये जो किताब है 'ठीकरे की मंगनी' इसमें औरत का एक घर का तस्वुर दिया है जो पुरानी सोच से एकदम अलग है।" "एक घर औरत का अपना भी तो हो सकता है, जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग, उसकी मेहनत और पहचान का हो।"

उपन्यास के कथा की पृष्ठभूमि बस्ती कस्बा की है। इसमें बस्ती से अलीग़ढ़, कानपुर होते हुए दिल्ली तक के परिवेश की कहानी है। इस उपन्यास में एक टकराहट है 'नजरिया का'। मुख्य समस्या की शुरुआत महरुख के जन्म से ही हो जाती है; क्योंकि जैदी परिवार में चार पुश्तों से लड़की का जन्म नहीं हुआ था और अगर लड़की पैदा भी हुई तो जिंदा न रह सकी। लेकिन महरुख की कानपुर वाली मासी ने एक टोटका से महरुख की जिंदगी को बचा लेती हैं। महरुख की मंगनी ठीकरे से कर देती हैं "खालिदा, आज से यह लड़की मेरी हुई। कानपुर वाली खाला ने उसकी पैदाइश के फ़ौरन बाद गन्दगी से भरे ठीकरे पर चांदी का चमचमाता रूपया फेंककर कहा था। यह 'टोटके' की रस्म थी, ताकि लड़की जी जाए, इसके ददिहाल में तो लड़कियां जीती नहीं न थीं। शाहिदा ने पैदा होते ही उसे गोद ले लिया था, मगर यह टोटके की रस्म सच पूछो, 'ठीकरे की मंगनी' में बदल डाली थी।"

संयुक्त परिवार की खूबसूरती को लेखिका ने महरुख के परिवार के माध्यम से बताने की कोशिश की हैं, साथ ही ये भी चित्रित किया है कि जिस परिवार में लड़कियां नहीं होती है और फिर वहाँ लड़की का जन्म होताहै तो उस परिवार में लड़की का महत्व कितना बढ़ जाता है, कैसे परिवार में खुशियां ही खुशियां आ जाती हैं। महरुख के घरवालों का मानना था कि "सच कहा है किसी ने लड़की घर की बरकत होती है।" महरुख अपने दादा जी के आँखों का नूर थी "महरुख दादा की आँखों का नूर और दिल का सुरूर थी अम्मी–अब्बू की खुशी और गुरूर का नायाब तोहफ़ा, चचा और ताया के लिए एक रूहानी राहत का सामान और बाकी खानदान वालों के लिए एक इत्मीनान कि चलो खानदान पर से फ़कीर की दी बद्दुआ का साया तो हटा और हमें लड़की का मुहँ देखना नसीब हुआ।" पर्व–त्योहार के वक्त जब सब नया चाँद को देखते तो महरुख के दादा–दादी उसका चेहरा देखकर त्योहार मनाते "दादा–दादी तो चाँद देखते ही आँखें बंद करके दुआ पढ़ते, फिर सीधे महरुख का मुँह देखते। रस्म तो यही थी कि या तो आइना देखो या खुद की हथेलियां या फिर किसी खूबसूरत प्यारे चेहरे को। महरुख का नाम भी 'चांद–से–चेहरे वाली' इसीलिए छांटकर रखा गया था।"

जब महरुख बड़ी होती है तो उसकी शादी की चिंता उसके माता–पिता को होने लगती है, जो कि हर माँ–बाप के लिए स्वभाविक है, क्योंकि मँगनी तो बचपन में ही हो गई थी। लेकिन जब शादी की बात होती तो रफ़त मियां महरुख को आगे पढ़ाने के लिए दिल्ली भेजने को कहते। परंतु महरुख के पिता कि इच्छा थी कि "मैं तो चाहता था कि रफ़त मियां, अब खुद अपनी जिम्मेदारी संभाल लें, मगर वह बजाए शादी करने के लड़की को आगे पढ़ाने का मसला उठा रहे हैं।" तो उसकी अम्मी कहती हैं कि "मेरी मानो तो अल्लाह का नाम लेकर लड़की को रवाना कर दो। आखिर सगा खालाजाद भाई है, कोई दुश्मन तो नहीं, फिर कल को बीबी भी तो उसी की बनेगी" मां–बाप की चिंता अपने बच्चों को खासकर लड़की संतान के भविष्य को लेकर कितनी होती है और किस प्रकार होती है? इसको बहुत ही करीब से लेखिका ने चित्रण करने की कोशिश की हैं महरुख के अब्बू–अम्मी के वार्तालाप के माध्यम से "मैं तो इतना जानती हूँ कि हम तब नहीं डरे लोगों की बोलियों–ठोलियों से तो अब क्या खाक डरेंगे? मैं औरत हूँ, खूब अच्छीतरह से जानती हूँ कि इस नए दौर में औरत के लिए मजबूती क्या होनी चाहिए। जमाने के कहने से क्या हमने लड़कियां स्कूल से निकलवा ली थीं? ..... मगर लड़की अपना–बुरा समझे यह अक्ल तो तालीम ही दे सकती है।" यहाँ अम्मी बेटी की शिक्षा के प्रति बहुत ही तत्पर है, शिक्षा के महत्व को समझती हैं। जैसा कि आज भी कोई बच्चा घर से दूर पढ़ने जाता है तो उसके माता–पिता उसे समझाते हैं कि बाहर कैसे रहना चाहिए इत्यादि। ठीक उसी प्रकार महरुख की दादी भी उसे समझाती है कि "अपनी मुट्ठी कसके बांध रखना, फिर फिक्र की कोई बात नहीं है।"

महरुख की वैचारिकी का स्तर ऊँचे दर्जे का है। वह दिल्ली विश्वविद्यालय के वातावरण को जब समझ जाती है तो वो कहती है कि "बस्ती जैसे कस्बे में वह कौन–सा इल्म लेकर जाएगी, जिसकी ठोस जरूरत वहाँ के माहौल को हो? वहाँ के मेहनतकश, गरीब इंसानों से क्या वह इन विषयों पर बहस कर

सकती है या गमन के रूप में हर एक गाँव और कस्बे को छोड़कर महानगरी की तरफ़ पलायन ही उन्नति के शिखर पर पहुचने की व्यक्तिगत कोशिश–भर है? ये शब्द, ये भाषण बिना व्यवहार के बेकार हैं। ऐश व आराम में रहकर गरीबी की कशमकश की बातें करना, भुख के दर्द को पहचान सकने की एक सतही कोशिश है। वह यह सब कुछ रफ़त भाई से नहीं कह सकती है।"

इस उपन्यास में पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण को भी लेखिका ने प्रदर्शित किया है रफ़त भाई के माध्यम से। रफ़त भाई का मानना है कि हालात का तकाजा जो कहे अपना काम निकालने के लिए वो काम कर लेना चाहिए। लिविंग में रहने की बात पर रफ़त भाई कहते है कि "वहाँ मैं अजीब मुसीबत में फंस गया था। करता भी क्या? हालात का तकाजा यही था। वरना छः साल् गुजारने मुश्किल हो जाते और फिर पता नहीं डिग्री मिलती भी या नहीं। मैं बिना डिग्री के वापस नहीं लौटना चाहता था।" लेकिन जब महरुख को पता चलता है कि रफ़त भाई अमेरीका में वैलेरी नाम की किसी महिला के साथ 'लिविंग–टू–गेदर' में रहते हैं तो वह एकदम से टूट जाती है और उसके मुहँ से सिर्फ यही शब्द निकलता है कि "नहीं–नहीं, यह झूठ है, सरासर झूठ!" ये सब जानने के बाद महरुख को इंसानी रिश्ते भी कागज के नाव की तरह दिखते हैं जो सारी एहतियात के बाद हालात के समन्दर में डूब जाते हैं।

इन सब के बाद महरुख अपने अस्तित्व की तलाश में एक गाँव के स्कूल में अध्यापिका बनकर गाँव में बस जाती है। वह अपनी तन्हाई को कम करने के लिए शाम को "क्लास में कमजोर बच्चों को वह घर पर बुलाने लगी थी। उसकी इस मेहनत का असर बच्चों के नतीजों पर पड़ा था। उसका वक्त आसानी से कटने लगा और बच्चों की दिलचस्पी पढ़ाई में बढ़ने लगी।"

ईद के मौके पर महरुख घर जाती है तो पता चलता है कि रफ़त भाई आयें हैं और इसी के साथ ये भी कि अपनी मेम को छोड़ कर आए हैं। महरुख के अब्बू–अम्मी को उम्मीद जागती है कि उसका निकाह रफ़त भाई से हो सकती है। जैसा कि समाज की मान्यताएं है कि "मर्द सौ गलती करें, तो उन्हें माफ़ी, औरत एक करे तो उसके लिए पिस्तौल तैयार है। कभी सुना है कोई मर्द औरत के नाम पर बैठा हो, मगर औरत एक मर्द के नाम पर जिन्दगी तज देती है। सारी जिन्दगी उसी के नाम की माला जपती रहती है।" इसलिए उसके घर वालों की राय थी कि "जब लड़का शर्मिंदा है, तो फिर झगड़े को आगे बढ़ाना मुनासिब नहीं है। जवानी में उंच–नीच तो होती ही रहती है।" लेकिन महरुख ने ठान रखा है कि वह अब किसी से विवाह नहीं करेगी। बार–बार विवाह के लिए कहने पर वह कहती है कि "आखिरी बार अब मैं सबके सामने, खासकर, अब्बू, मैं आपसे कह रही हूँ कि रफ़त साहब सिर्फ़ मेरे बड़े भाई हैं। मैं उनको अपने बुजुर्ग की तरह देखती हूँ, बस!" यहाँ महरुख के चरित्र को पूर्ण आत्मविश्वास के साथ उभारा है। तालीम ही है कि उसे अपने हक और जिंदगी का फैलसा लेने में सहायक होती है।

परिवार में सभी भाई–बहन अपने–अपने जीवन में व्यस्त हो जाते हैं। भाइयों की जरूरत के कारण गाँव के मकान को बेचना पड़ता है तो महरुख के भाई–बहन कहते हैं कि महरुख अप्पा मेरे साथ रहेंगी–मेरे

साथ रहेंगी, तो महरुख कहती है कि मैं किसी के साथ नहीं रहूँगी मैं भी अपने घर रहूँगी। इस पर सभी आश्चर्य से पूछते हैं कि आप अब कौन– सा घर में रहेंगी तो महरुख कहती है कि "एक घर अपना भी तो हो सकता है, जो उसके बाप–शौहर के घर से अलग, उसकी मेहनत और पहचान का हो। .... मेरा अपना घर वही पुराना है, जहाँ मैं पिछले तीस साल रही हूँ। तुम लोग अपने–अपने घर लौट रहे हो, मैं अपने घर लौट रही हूँ। इसमें परेशान होने की क्या बात है? महरुख ने बड़े इत्मीनान से कहा।"

इस प्रकार हम देखते है कि नासिरा शर्मा इस उपन्यास के एक अकेली स्त्री अपने वजूद को कैसे समाज में बनाए रखती है और अपने पहचान के लिए कितना संघर्ष करती है। एक मिथक के कारण उसे पूरी जिंदगी अकेले काटनी पड़ती है। यहाँ दोनों मुख्य पत्रों महरुख और रफ़त भाई के वैचारिकी में नजरिया का फ़र्क है। रफ़त भाई जहाँ अपने जीवन में आगे रहने के लिए जो सामने आए सब कर सकते हैं लेकिन महरुख नहीं।

संदर्भ सूची :

1 https://youtu.be/dXMexPsqJSM
2 ठीकरे की मंगनी : नासिरा शर्मा, कथन
3 https://youtu.be/dXMexPsqJSM
4 ठीकरे की मंगनी : नासिरा शर्मा, पृष्ठ 197
5 ठीकरे की मंगनी : नासिरा शर्मा, किताबघर प्रकाशन, संस्करण 2014, पृष्ठ 17
6 वही, पृष्ठ 12
7 वही
8 वही, पृष्ठ 13
9 ठीकरे की मँगनी : नासिरा शर्मा, पृष्ठ 19
10 वही, पृष्ठ 21
11 वही, पृष्ठ 22
12 वही, पृष्ठ 26
13 ठीकरे की मंगनी : नासिरा शर्मा, पृष्ठ 35
14 वही, पृष्ठ 116
15 वही, पृष्ठ 60
16 वही, पृष्ठ 65
17 वही, पृष्ठ 135
18 वही, पृष्ठ 118
19 वही, पृष्ठ 133
20 वही, पृष्ठ 197

❐